शुल्क 15 वर्ष
2100/– रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति 8/– रुपये
वार्षिक 250/– रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 17 : अंक 46 : नई दिल्ली : 19–25 फरवरी 2012

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी जसोल की ओर विहार करते हुए मेवाड़ के अन्तिम छोर पर पहुंच गए हैं। पूज्यप्रवर का 25 फरवरी को मारवाड़ संभाग में प्रवेश हो जाएगा। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। पूज्यप्रवर आगामी 22 अप्रेल को बालोतरा पधार जाएंगे। वहां 30 अप्रेल को आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के चतुर्थ चरण का आयोजन होगा। इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है। अक्षय तृतीया का समायोजन भी बालोतरा में ही होगा।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण मारवाड़ की ओर

समाज में रहे सौमनस्य का भाव

5 फरवरी। विहार से पूर्व आमेट में मंगलभावना समारोह का आयोजन। स्थानीय तेयुप के सदस्यों ने गीत प्रस्तुत किया। श्री रोशनलाल कोठारी, श्री चांदमल छाजेड़, तुलसी अमृत विद्यापीठ के प्राचार्य श्री मोहनलाल दक, श्री प्रकाश बोहरा, श्री कुन्दन लोढ़ा, श्री बाबूलाल कच्छारा, श्री विनोद कच्छारा, श्रीमती प्रिया सूर्या, श्री देवीलाल हिरण, श्री ललित लोढ़ा एवं श्री कंवरलाल रांका ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री धर्मचन्द खाब्या एवं तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल कच्छारा ने अपने वक्तव्य में मर्यादा महोत्सव के आयोजन को आमेट नगर एवं समाज का सौभाग्य बताया। शासनश्री साध्वी नगीनाजी के वक्तव्य के पश्चात् उनकी नवीन कृति 'कस्तूरी कुंडल बसे' साध्वी मधुबालाजी ने पूज्य चरणों में उपहृत की। साध्वी रिद्धियशाजी एवं साध्वी प्रेक्षाप्रभाजी ने गीत प्रस्तुत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में अनासक्ति को बंधनमुक्ति का मार्ग बताया। आचार्यवर ने कहा––'साध्वी रिद्धियशा एवं साध्वी प्रेक्षाप्रभा––इन दोनों शिष्याओं को बहिर्विहारी बनाया है। गुरुकुलवास में या बहिर्विहार में रहने की अपेक्षा गुरु–निर्देश की अनुपालना महत्त्वपूर्ण है। रिद्धियशा पहले समणी के रूप में प्रिंसिपल रही है, अब छोटी साध्वी बनी है। अच्छी और विवेकशील साध्वी है। प्रेक्षाप्रभा भी शालीन और समझदार साध्वी लगी। दोनों साध्वियां अच्छा विकास करें। साध्वी नगीनाजी प्रबुद्ध साध्वी है। उनकी पुस्तक से पाठकों को आध्यात्मिक प्रेरणा प्राप्त हो।'

आमेट में संपन्न मर्यादा महोत्सव की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा––'हमने कल साधु–साध्वियों की सामूहिक संगोष्ठी में 148वें मर्यादा महोत्सव को विदा दे दी है। मर्यादा महोत्सव का कार्य दुष्कर तो नहीं, किन्तु कठिन अवश्य है। श्रावक समाज को देखता हूं, उनमें कितनी निष्ठा और श्रद्धा की भावना है। इतने बड़े काम को श्रावक समाज बखूबी कर लेता है। कन्हैयालालजी कच्छारा को मैं पहले से जानता हूं। वे पुराने कार्यकर्ता हैं। धर्मचन्दजी खाब्या को इस बार देखा। अच्छा काम करने वाले समझदार श्रावक प्रतीत हुए। अन्य कार्यकर्ताओं ने भी अपने दायित्व का निर्वाह किया। सभी पवित्र कार्य करते रहें।'

आचार्यवर ने आगे कहा––'आमेट के सभी समाज के लोगों में सौहार्द का भाव रहे। यहां का श्रावक समाज धार्मिक पुरुषार्थ करता रहे। सबके दिलो दिमाग में देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था और सौमनस्य का भाव रहे। गुणात्मकता की वृद्धि करते हुए सभी धर्मशासन की सेवा करते रहें। यहां के तेरापंथ भवन में नियमित रूप से सामायिक, जप आदि का उपक्रम और अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि का कार्य भी चले। मैंने गुरु वचन को पूरा कर दिया, इसका मुझे आत्मतोष है। अपने आपको मैं हल्का महसूस कर रहा हूं। लोग कहते हैं, हमें ब्याज सहित मिलना चाहिए था। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने मर्यादा महोत्सव प्रदान किया था, पर इसके साथ दीक्षा महोत्सव

आयोजित कर हमने ब्याज की भी भरपाई कर दी। अब सभी साधु–साध्वियां यहां से सुखे–सुखे विहार करें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया। पूज्य आचार्यवर आज प्रातः तेरापंथ समाज द्वारा संचालित तुलसी अमृत विद्यापीठ में भी पधारे और उसका अवलोकन किया।

आमेट मर्यादा महोत्सव : कुछ उल्लेखनीय तथ्य

- मर्यादा महोत्सव की श्रृंखला का यह 148वां मर्यादा महोत्सव था। इसमें 70 साधुओं, 113 साध्वियों, 2 समण व 85 समणियों की संभागिता के साथ लगभग पन्द्रह हजार से बीस हजार श्रद्धालुओं की उपस्थिति में यह महोत्सव निर्विघ्न और सानंद संपन्न हुआ। इसमें प्रायः पूरे देश के लोग तो संभागी बने ही, मेवाड़ के निवासी और प्रवासी बड़ी संख्या में पहुंचे। संभवतः मेवाड़ संभाग का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहा होगा, जहां से श्रद्धालु न पहुंचे हों। अहमदाबाद, सूरत, मुम्बई, दक्षिण भारत आदि सुदूर प्रान्तों में प्रवास करने वाले इस संभाग के निवासियों ने बड़ी संख्या में आकर गौरव का अनुभव किया। सैकड़ों इतर तेरापंथी लोगों ने इस विराट उत्सव पर पहुंच कर तेरापंथ के अनुशासन, संगठन व आज्ञानिष्ठा के जीवंत रूप को देखा और प्रभावित हुए। आचार्यवर ने चतुर्मासों की नियुक्तियां कीं, उसे साधु–साध्वियां जिस सहजता से स्वीकार कर रहे थे, वह उन लोगों के लिए विस्मय से कम नहीं था। इस अवसर पर परम पूज्यवर द्वारा प्रदत्त पावन उद्‌बोधन सम्पूर्ण तेरापंथ समाज के लिए प्रेरक, पथदर्शक, सम्पोषक और सतत स्मरणीय है।
- आमेट का इक्कीस दिवसीय प्रवास साताकारी व सुखद रहा।पूज्य आचार्यवर व संतों का प्रवास तेरापंथ भवन व बाफणा सदन में हुआ। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी व साध्वियों का प्रवास समाज द्वारा संचालित तुलसी अमृत विद्यापीठ में हुआ। समणीवृन्द महावीर भवन, श्री ज्ञानेश्वर मेहता व श्री तेजराज हिरण के मकानों में प्रवासित रहीं।
- मर्यादा महोत्सवकालीन अतिशय व्यस्तता के बावजूद श्रद्धेय आचार्यवर ने आमेट के सभी श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श किया। इस दौरान अनेक अन्य जैन–जैनेतरसमाज के घर भी पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन हुए। पूज्यवर ने सभी श्रद्धालु परिवारों को निकट उपासना का अवसर प्रदान किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी भी प्रायः सभी श्रद्धालुओं के घरों में पधारीं।
- मर्यादा महोत्सव के अवसर पर हर वर्ष की भांति पूज्यवर की पावन सन्निधि में साधु–साध्वियों और समणश्रेणी के लिए सारणा–वारणा और प्रशिक्षण के उपक्रम चले। दिनांक 16,18,20,22,24–26 जनवरी और 4 फरवरी को सामूहिक संगोष्ठियों का क्रम रहा, जिनमें अंतरंग परिषद को पूज्यवर का मार्मिक संबोध, मार्गदर्शन और पाथेय संप्राप्त हुआ।
- परम श्रद्धेय आचार्यवर के दैनिक प्रवचन तुलसी अमृत विद्यापीठ परिसर में निर्मित 'अहिंसा समवसरण' में हुए। लगभग सतहत्तर हजार वर्गफीट का पण्डाल श्रद्धालुओं से भरा रहता। प्रातः आयोजित हुई अष्टदिवसीय दर्शनाचार प्रवचनमाला में आचार्यवर के प्रेरक प्रवचन हुए। प्रवचनोपरान्त चले जिज्ञासा–समाधान का क्रम बहुत प्रभावी रहा। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम हेतु निर्मित 'मर्यादा समवरण' लगभग अस्सी हजार वर्गफीट का था।
- आवासीय व्यवस्था सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार श्री चन्द्रप्रकाश डूंगरवाल एवं श्री गिरीश पुरोहित की जमीन पर कुटीरों का निर्माण हुआ। इनमें एक कमरे की 210, रसोई सहित कमरे 36 तथा हॉल 10 थे। इनके अलावा नगर की अनेक धर्मशालाएं, विद्यालय और समाज के भवन आदि भी आरक्षित थे।
- भोजनालय सूत्रों के अनुसार कुल बावन हजार कूपन उपयोग में आए। साठ हजार वर्गफीट भू–भाग में निर्मित भोजनशाला का प्रबंधन एवं प्रायोजकत्व श्री तख्तमलजी कच्छारा परिवार द्वारा किया गया। शासनसेवी श्री बाबूलाल कच्छारा एवं श्री विनोद कच्छारा ने भोजनालय व्यवस्था का दायित्व निर्वहन किया।
- आमेट प्रवास व पाद विहार के व्यवस्थापन हेतु आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति गठित हुई। संयोजक श्री धर्मचन्द खाब्या के नेतृत्व में पूरी टीम ने यह दायित्व संभाला। समिति के सहसंयोजक श्री सलिल लोढ़ा, श्री कंवरलाल रांका, कोषाध्यक्ष श्री मनसुख गेलड़ा व स्वागताध्यक्ष श्री शांतिलाल उत्तमचन्द बाफणा थे। समिति के अन्तर्गत विभिन्न उपसमितियां बनीं, जिन्होंने विभिन्न व्यवस्थाओं का सुचारु रूप से संचालन किया।

- तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल कच्छारा, कार्यकारी अध्यक्ष श्री महेन्द्र बोहरा, मंत्री श्री लाभचन्द हिंगड़, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री प्रवीण ओस्तवाल, मंत्री श्री अनिल रांका, महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती मंजु गेलड़ा, मंत्री रेणु छाजेड़ का भी यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहा।
- आमेट प्रवास की व्यवस्था में नगरपालिका चेयरमैन श्री कैलाश मेवाड़ा, तहसीलदार श्री शिवकिशोर सोनी, मजिस्ट्रेट श्री देवेन्द्रसिंह भाटी, थानाध्यक्ष श्री दलपतसिंह राठौड़ आदि पूरी तरह सक्रिय रहे और अपना दायित्व कुशलता से निभाया।

आमेट से मंगल विहार

मर्यादा महोत्सव का इक्कीस दिवसीय प्रवास परिसंपन्न कर आज अपराह्न 2.40 बजे पूज्य आचार्यवर ने आमेट से सेलागुड़ा के लिए मंगल विहार किया। विहार के समय नगर की गलियां और सड़कें जनसंकुल बन गईं। छत्तीस कौमों के लोग मार्ग के दोनों ओर खड़े होकर मानवता के मसीहा का अभिवादन कर रहे थे। लक्ष्मी बाजार, पुलिस स्टेशन, रेलवे स्टेशन, आसन गांव होते हुए आचार्यवर 5.08 किमी. का विहार कर सेलागुड़ा पधारे। गांववासियों ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। आमेट के लोग बड़ी संख्या में सहयात्री बने। सेलागुड़ा में आचार्यवर का प्रवास बद्रीप्रसाद देवासी के आवास पर हुआ। देवासी परिवार पूज्यवर को अपने घर–आंगन में पाकर धन्यता की अनुभूति कर रहा था। रात्रिकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर ने राजस्थानी भाषा में प्रदत्त अपने प्रवचन में लोगों को नशामुक्त बनने की प्रेरणा दी। सेलागुड़ा में तेरापंथ समाज के पांच घर हैं। सायंकालीन आहार के उपरान्त सभी के घर पूज्यवर की चरणरज से पावन बने। रात्रि में सभी श्रद्धालु परिवारों को आचार्यवर की निकट सेवा का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रबल रहे मनोबल

6 फरवरी। परमपूज्य आचार्यवर सेलागुड़ा से 11.07 किमी. का विहार कर कुआंथल पधारे। आराध्य को अपने गांव में पाकर श्रद्धालुओं का उत्साह चरम पर था। वातावरण में सर्वत्र प्रसन्नता और पुलकन थी। यहां पूज्यवर का प्रवास स्थानीय तेरापंथ भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने पूज्यवर के स्वागत में गीत का संगान किया। श्री विनोद डूंगरवाल ने आस्थासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। गांव के गणमान्य महानुभावों ने नशामुक्ति के संकल्पपत्रों से युक्त कलश पूज्य चरणों में समर्पित किया। मुनि प्रकाशकुमारजी ने अपने विचारों को अभिव्यक्त किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा––'परमपूज्य आचार्यप्रवर की संकल्प शक्ति दृढ़तम है। आचार्यवर ने लगभग पौने दो वर्ष पूर्व आचार्य महाप्रज्ञजी की अवशिष्ट यात्रा को पूरा करने का संकल्प किया और उसे पूर्ण कर दिखाया। ऐसी ही संकल्प शक्ति हम सबमें जागे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने आचार्यवर को 'महातपस्वी' संबोधन प्रदान किया था। महातपस्वी वह होता है, जो ज्ञान के द्वारा अपने मन को, चारित्र के द्वारा अपने शरीर को और नियमों के द्वारा अपनी इन्द्रियों को साध लेता है। आचार्यवर में ये तीनों बातें अनायास ही देखी जा सकती हैं। इसलिए आचार्यवर यथार्थतः महातपस्वी हैं। कुआंथलवासी शुभ संकल्पों के द्वारा आचार्यवर का सच्चा स्वागत करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा––'जीवन में मनोबल का बड़ा महत्त्व होता है। मनोबल होता है तो व्यक्ति कठिन कार्य करने के लिए भी तत्पर हो जाता है। मनोबल के अभाव में छोटी–सी कठिनाई को झेलना भी मुश्किल हो जाता है। कार्य करते हुए विघ्न तो आ सकते हैं, पर उनसे घबराना दुर्बलता है। विपत्ति के पहाड़ों का भेदन कर मार्ग निकाल लेना शौर्य का कार्य है। महामना आचार्य भिक्षु के जीवन में कितनी कठिनाइयां आईं। अगर उनमें शौर्य और आत्मबल नहीं होता तो धर्मसंघ का विकसित रूप सामने कैसे आता? परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के जीवन में भी कितने ही संघर्ष आए, अंतरंग और बहिरंग दोनों रूप में उनका कितना विरोध हुआ। हम अनुमान लगा सकते हैं कि उनमें कितने मनोबल का भाव रहा होगा। परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी उन विरोधों को

झेलने में गुरुदेव तुलसी के साथ ही थे। मनोबल रहता है तो व्यक्ति के लिए बड़ी–बड़ी कठिनाइयां भी सामान्य बन जाती हैं, अन्यथा छोटी–छोटी बाधाएं भी पहाड़–सी बन जाती हैं। इसलिए हम अपने मनोबल को जागृत रखें।'

पूज्य आचार्यवर ने संबोधि में वर्णित भगवान महावीर और मुनि मेघकुमार के संवाद में उल्लिखित मनोबल की दुर्बलता के कारणों की चर्चा करते हुए चिन्ता, भय, शोक, क्रोध आदि से बचने की प्रेरणा प्रदान की।

आचार्यवर ने प्रसंगवश कहा—'मुनि मोहजीतकुमारजी वर्षों से संयोजन का कार्य कर रहे हैं। हमारे पास इस बार का आज उनका अन्तिम संयोजन है। कल ये शासनश्री मुनिश्री सुखलालजी स्वामी के सहअग्रणी के रूप में दिल्ली की ओर प्रस्थान करने वाले हैं। इन्होंने संयोजन का कार्य अच्छे रूप में संभाला है। अब दिल्ली में अच्छा कार्य करना है।' पूज्यवर ने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया।

कुआंथल में साठ तेरापंथी परिवार हैं। सायंकालीन आहार के उपरान्त आचार्यवर ने उनके घरों को पावन किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में पारिवारिक सेवा का उपक्रम रहा। श्री मांगीलालजी बाबेल ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया।

नौ किलोमीटर का अतिरिक्त विहार

7 फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यवर का आज का प्रवास कुआंथल से लगभग सात किमी. दूर स्थित दौलाजी का खेड़ा में निर्धारित था। किन्तु पार्श्ववर्ती नराणा के श्रद्धालुओं की भावना के कारण पूज्यवर के लिए यह विहार लगभग सोलह किमी. का हो गया। आचार्यवर प्रातः कुआंथल से नराणा पधारे। शान्तिदूत आचार्यवर का अपने गांव में स्वागत कर नराणा के सभी वर्गों के लोग हर्षविभोर थे। अपने स्वल्प प्रवास में आचार्यवर ने यहां के तीन श्रद्धा के घरों सहित एक अन्य जैन परिवार के घर को भी अपनी चरणरज से पावन किया। स्थानीय रावले में भी आचार्यवर का पावन पदार्पण हुआ।

यहां आयोजित एक संक्षिप्त कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री प्रतापचन्द पोरवाड़ ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। सरपंच श्री भंवरलालजी गुर्जर, ठाकुर मानसिंहजी चौहान आदि ने नशामुक्ति के दो सौ फार्म आचार्यवर को उपहृत किए। पूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में जनता को अहिंसा यात्रा के उद्‌देश्यों की अवगति देते हुए अनुकंपा भाव को विकसित करने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों ने नशामुक्त रहने का संकल्प स्वीकार किया।

नराणा से दौलाजी का खेड़ा की ओर विहार करते हुए मध्यवर्ती गांव महासिंहजी का खेड़ा के ठाकुर एवं पूर्व डी.आई.जी. श्री प्रेमसिंहजी चुंडावत के अनुरोध पर आचार्यवर स्थानीय रावले में पधारे। रावले के बाहर समायोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में श्री प्रेमसिंहजी ने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। पूज्यवर ने उपस्थित ग्रामीणों को पावन पाथेय प्रदान किया। मार्ग में स्थित भगतपुरा के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने भी पूज्यवर से पावन प्रेरणा प्राप्त की।

लगभग सोलह किमी. का प्रलम्ब विहार कर आचार्यवर लगभग बारह बजे दौलाजी का खेड़ा पधारे। आचार्यवर के पदार्पण से ग्रामवासियों में जैसे श्रद्धा का ज्वार उमड़ पड़ा। सर्वत्र उत्सव जैसा माहौल था। यहां आचार्यवर का प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति के बाद श्री शांतिलाल गांधी, श्री लक्ष्मीलाल गांधी, श्री सुरेशकुमार गांधी, सरपंच श्री गेहरीलाल गुर्जर एवं ठाकुर उम्मेदसिंहजी ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने उपस्थित जनता को दीर्घ श्वासप्रेक्षा, एकाग्रता, आवेगों पर नियंत्रण, संकल्पशक्ति के विकास के द्वारा आत्मबल को सुदृढ़ बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

दौलाजी का खेड़ा में तेरापंथ समाज के छह घर हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात् आचार्यवर उनके घरों में पधारे। रात्रि में श्रद्धालुओं को पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

समाधि प्राप्ति का मार्ग वीतरागता

8 फरवरी। परमाराध्य आचार्यवर ने आज प्रातः ननाणा के लिए प्रस्थान किया। मार्गवर्ती बियाना गांव में बड़ी

संख्या में उपस्थित ग्रामीणों को आचार्यवर ने पावन संबोध प्रदान किया। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया।

मार्गस्थ खाखरमाला में भी आचार्यवर का पदार्पण हुआ। यहां तेरापंथी हिरण परिवार के पांच घर हैं। पूज्यवर का स्वागत कर गांववासी हर्षविभोर थे। संक्षिप्त कार्यक्रम में श्रद्धालुओं ने पूज्यवर की अभ्यर्थना में अपने भाव–सुमन अर्पित किए। आचार्यवर ने जनता को जीवनशैली को प्रशस्त बनाने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम के उपरान्त आचार्यवर ने सभी श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श किया। इस दौरान जैनेतर समाज के अनेक घर भी पूज्यवर की पदरज से पावन बने।

कुल सोलह किमी. का विहार कर आचार्यवर ननाणा पधारे। आचार्यवर का पदार्पण ननाणावासियों के लिए मानों सभी त्योहारों का संगम बन गया। श्रद्धालुओं की मुखाकृति पर थिरकती प्रसन्नता उनके आन्तरिक भावों को अभिव्यक्ति दे रही थी। ननाणा में आचार्यवर का प्रवास श्री मांगीलाल बाबेल के आवास पर रहा। पूज्यवर का अनुग्रह प्राप्त कर बाबेल परिवार प्रफुल्लित और प्रमुदित था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा––'व्यक्ति के मन में सुखेच्छा रहती है। केवल व्यक्ति में ही नहीं, छोटे–छोटे प्राणियों में भी सुख और समाधि पाने की इच्छा रहती है। संबोधि में आधि, व्याधि और उपाधि को समाधि प्राप्ति में बाधक बताया गया है। मानसिक व्यथा, शारीरिक अस्वस्थता और भावात्मक बीमारी को क्रमशः आधि, व्याधि और उपाधि कहा जाता है। जो व्यक्ति वीतरागता की साधना करता है, वह आधि, व्याधि और उपाधि से मुक्त रहता हुआ समाधि का वरण कर सकता है।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। श्री मुकेश बाबेल ने पूज्यवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण विचारों को प्रस्तुति दी। ननाणा में तेरापंथ समाज के बारह घर हैं। बताया गया––वे सभी बारह घर प्रायः खुले रहते हैं। सायंकालीन आहार के उपरान्त आचार्यवर ने सभी घरों का स्पर्श किया। इस दौरान आचार्यवर स्थानीय तेरापंथ भवन में भी पधारे। यहां कुछ क्षण विराज कर आचार्यवर ने 'प्रभो ! यह तेरापंथ महान' गीत का संगान किया।

दिवेर में भव्य स्वागत

9 फरवरी। परमाराध्य आचार्यवर आज प्रातः दिवेर की ओर प्रस्थित हुए। मध्यवर्ती उमराज और डोडिया का खेड़ा गांव के ग्रामीणों को पूज्यवर से पावन संबोध प्राप्त हुआ। टपाला का खेड़ा में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने आचार्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

लगभग तीन किमी. का अतिरिक्त विहार कर आचार्यवर नरदास का गुड़ा पधारे। यहां तेरापंथ समाज के सोलह घर हैं। अपने स्वल्प प्रवास में आचार्यवर ने सभी घरों का स्पर्श किया। एक संक्षिप्त कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति के उपरान्त श्री मोहन पोरवाड़ ने भावाभिव्यक्ति की। मुनि प्रसन्नकुमारजी ने अपने पैतृक गांव में आराध्य का अभिनंदन किया। पूज्य आचार्यवर ने गांववासियों को मानव जीवन को सफल बनाने हेतु उत्प्रेरित किया।

कुल ग्यारह किमी. का विहार कर आचार्यवर द्विदिवसीय प्रवास हेतु महाराणा प्रताप की विजयस्थली दिवेर पधारे। आचार्यवर के स्वागत में मानों पूरा दिवेर उमड़ पड़ा। स्वागत जुलूस में सम्मिलित हजारों विद्यार्थी अहिंसा यात्रा के उद्घोषों को बुलंद स्वरों में गुंजायमान बना रहे थे। श्रद्धालुओं का उत्साह चरम पर था। श्रद्धा से ओतप्रोत पूरा नगर एक अलौकिक वातावरण की सृष्टि कर रहा था। स्वागत जुलूस के मध्य स्थानीय तेरापंथ भवन में पूज्यवर का पदार्पण हुआ। श्रीमती फूलीबाई भेरूंलालजी नाहर राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय में आचार्यवर का द्विदिवसीय प्रवास हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। सभा के अध्यक्ष श्री जुगराज नाहर ने अपने आस्थासिक्त भावों को प्रस्तुति दी। मुनि संजयकुमारजी और मुनि प्रसन्नकुमारजी ने अपनी जन्मभूमि में आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। शासनश्री मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' के सहवर्ती मुनि जयंतकुमारजी ने छापर सेवाकेन्द्र के लिए प्रस्थान से पूर्व अपने विचार व्यक्त करते हुए पूज्यवर के मंगल आशीर्वाद की याचना की।

कार्यक्रम में आमेट प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री धर्मचन्द खाब्या, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल कच्छारा आदि ने सेरा प्रान्त व्यवस्था समिति के मंत्री श्री फूलचन्द छत्रावत आदि को व्यवस्था के दायित्व हस्तान्तरण के रूप में जैन ध्वज सौंपा। श्री फूलचन्द छत्रावत ने अपने विचार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में भाव, लेश्या और अध्यवसाय को विशुद्ध बनाने के लिए मन को शुद्ध बनाने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में उपस्थित कृषकों को आचार्यवर ने अणुव्रत के द्वारा जीवन स्तर को उन्नत बनाने हेतु उत्प्रेरित किया।

दिवेर आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा––'शासनस्तंभ मुनि घासीरामजी स्वामी हमारे धर्मसंघ के विशिष्ट मुनि थे। मैंने उन्हें देखा तो नहीं, किन्तु मन के किसी कोने में उनका स्थान है। जैसा मैंने सुना और जाना कि वे कुशल चर्चावादी, तत्त्वज्ञानी, आचार्य भिक्षु के सिद्धान्तों के गहरे ज्ञाता और आचारनिष्ठ मुनि थे। ऐसे सन्त की भूमि दिवेर में आज हम आए हैं। मंत्री मुनिश्री उनके पास रहे हैं। आपका अपना चिंतन, वैदुष्य, संघीय दृष्टिकोण और अपनी साधना है। ऐसे संत को मंत्री मुनि के रूप में प्राप्त करना धर्मसंघ के लिए शुभ है। यहां के मुनिश्री संजयकुमारजी स्वामी, मुनि प्रकाशकुमारजी और मुनि प्रसन्नकुमारजी––ये तीनों संत संसारपक्षीय भाई हैं। तीनों खूब अच्छा काम और साधना का विकास करते हुए धर्मसंघ की सेवा करते रहें।'

इसी क्रम में आचार्यवर ने आगे कहा––'शासनश्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी हमारे धर्मसंघ के वयोवृद्ध संतों में हैं। ये ज्यादातर गुरुकुलवास में रहे हैं। चिंतनशील, लिपिकार और कलाकार संत हैं। इस बार हमने चिंतन किया कि आपको तो चाकरी की बक्सीस है, किन्तु सहवर्ती संतों से चाकरी करवा लें। मुनि तन्मयकुमारजी, मुनि जयंतकुमारजी और मुनि अनुशासनकुमारजी युवा संत हैं। मुनि जयंतकुमारजी समण संस्कृति संकाय के सहप्रभारी और जनसंपर्क प्रभारी हैं। मैंने देखा कि निष्ठा और जागरूकता के साथ अपना दायित्व निभाते हैं, अच्छे विनीत संत हैं। अच्छा कार्य करते रहें। वृद्ध संतों की सेवा होती है तो मुझे बड़ी चित्तसमाधि मिलती है। मेरे लिए वह शुभ और निश्चिंतता का कारण होता है। तीनों संत मुनिश्री सुमेरमलजी की सेवा तो कर ही रहे हैं, आपके निर्देशन और देखरेख में वृद्ध संतों की भी खूब अच्छी सेवा करें।' पूज्यवर ने कार्यक्रम में समुपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया।

10 फरवरी। परमाराध्य आचार्यवर आज प्रातः महाराणा प्रताप विजयस्थली स्मारक के सन्निकट पधारे। उल्लेखनीय है––इस स्मारक का लोकार्पण अभी कुछ दिन पूर्व ही राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा हुआ था। महाराणा प्रताप द्वारा बहलोल खां के वध की ऐतिहासिक घटना की स्मृति कराने वाला यह स्मारक प्रलंब ऊंचाई पर स्थित है। आचार्यवर ने स्मारक का नीचे से ही अवलोकन किया।

मेवाड़स्तरीय मंगलभावना समारोह

10 फरवरी। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में मेवाड़स्तरीय मंगलभावना समारोह का समायोजन। श्रीमती प्रेमलता कच्छारा, श्री भैरूंलाल सिंयाल, श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट, श्री जुगराज नाहर, श्री हस्तीमल चिंडालिया, श्री अरविन्द चोरड़िया, श्री घेवरचन्द सुराणा, श्री सवाईलाल पोखरना, श्री हेमन्त डूंगरवाल, श्री महेन्द्र कोठारी, श्री प्रकाश लोढ़ा, श्री कैलाश मेवाड़ा, मेवाड़ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डा. बसंतीलाल बाबेल, श्री सोहनलाल लोढ़ा, तेरापंथ कन्यामंडल दिवेर, बालिका दीप्ति नाहर, श्रीमती मधु श्रीश्रीमाल, श्रीमती मंजु दक, श्री पदमचन्द पटावरी, श्री बाबूलाल लोढ़ा आदि ने पूज्यवर की अति प्रभावक मेवाड़ यात्रा के संदर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए आगामी यात्रा के प्रति मंगलभावना व्यक्त की तथा मेवाड़ में पुनः शीघ्र पधारने की प्रार्थना की।

राजस्थान के पूर्व गृहमंत्री श्री गुलाबचन्द कटारिया और पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्री शान्तिलाल चपलोत ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। मुनि संजयकुमारजी, मुनि प्रसन्नकुमारजी, मुनि प्रकाशकुमारजी, मुनि दर्शनकुमारजी एवं मुनि कोमलकुमारजी ने गीत, कविता, वक्तव्य आदि के माध्यम से पूज्य चरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए।

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा––'लगभग एक वर्ष से परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर मेवाड़ के इस पथरीले भू–भाग में अमृत वर्षा कर रहे हैं। उसमें अभिस्नात होकर हर व्यक्ति शान्ति, तृप्ति और धन्यता की अनुभूति कर रहा है। आचार्यवर की यह यात्रा फलदायी सिद्ध हुई है। इस यात्रा में लोगों को ऐसा लगा

कि उन्हें बहुत कुछ प्राप्त हो रहा है। यही कारण रहा कि आप लोगों के आकर्षण के केन्द्र बने और जनसैलाब उमड़ता रहा। ऊर्जा और शक्ति पाने हेतु लाखों लोग आपकी सन्निधि में उपस्थित हुए। मंगलभावना के अवसर पर यही कामना करती हूं कि जिस प्रकार आचार्यवर ने मेवाड़ के चप्पे–चप्पे को पवित्र किया है, उसी तरह भारत की संपूर्ण धरती को अपने चरण स्पर्श से धन्य बनाएं, जनता के जीवनस्तर को उन्नत बनाएं।'

मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी ने अपने अभिभाषण में कहा––'पूज्य आचार्यप्रवर मेवाड़ की यात्रा में गांव–गांव ही नहीं, घर–घर गए। जहां श्रद्धा का एक ही घर था, वहां भी गए। श्रावकों की संभाल के लिए आचार्यवर कितना परिश्रम कर रहे हैं। मेवाड़ के लोगों में प्रबल श्रद्धा–भक्ति है। मेवाड़ी लोगों की भक्ति और आचार्यवर के परिश्रम को अगर तोला जाए तो दोनों पलड़े बराबर मिलेंगे। मैं मेवाड़वासियों से कहना चाहूंगा––आचार्यवर ने आपके सपनों को साकार किया है। अब आपका कर्तव्य है कि आप आचार्यवर के सपनों को साकार बनाएं। आचार्यवर ने गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी पर सौ दीक्षाओं का संकल्प लिया है। मेवाड़ी लोग अगर परिवार के किसी सदस्य को सौंपते हैं तो वे आचार्यवर के संकल्प को साकार करने में योगभूत बनने के साथ–साथ स्वयं को भी इतिहास में अंकित करवा सकेंगे। मेवाड़ी लोग जहां कहीं रहें, उनकी संस्कृति और संस्कारों में देव, गुरु और धर्म साथ रहे।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा––'परमपूज्य आचार्यवर ने लगभग एक वर्ष की मेवाड़ यात्रा की। इस यात्रा में हमने देखा लोगों की श्रद्धा भावना उमड़–उमड़ कर अभिव्यक्त हो रही थी। आचार्यवर ने अपनी इस अहिंसा यात्रा के लक्ष्य निर्धारित किए और अपने प्रवचनों में जनता को बार–बार उनका उपदेश दिया। आचार्यवर ने अपने अमृत महोत्सव पर यह यात्रा की है। यदि मेवाड़ी लोग आचार्यवर की अहिंसा यात्रा के उद्‌देश्यों को हृदयंगम कर पाएं तो इस यात्रा और अमृत महोत्सव की धरोहर को सुरक्षित रख पाएंगे। आचार्यवर भविष्य में जब कभी मेवाड़ पधारें, अणुव्रतियों की एक फौज पूज्यवर के सम्मुख प्रस्तुत हो।'

महाश्रमणीजी ने आगे कहा––'मेवाड़ की ऊबड़–खाबड़ और उतार–चढ़ावयुक्त धरती में विशेष आकर्षण है। यह धरा सीख देती है कि जीवन के उतार–चढ़ावों में संतुलित रहो। यहां के सूखे और हरे–भरे वृक्ष भी हर परिस्थिति में समभाव की प्रेरणा देते हैं। खेतों की सुरक्षा के लिए सीमेंटरहित केवल, पत्थरों की दीवारें परिवारों के लिए सामंजस्य की प्रेरणा लिए हुए हैं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा––'हम लोग लगभग एक वर्ष पूर्व मेवाड़ आए। मेवाड़ की यात्रा करना हमारा लक्ष्य था। मैं पहले परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के साथ मेवाड़ आया था। उदयपुर मर्यादा महोत्सव के समय गुरुदेव ने मुझे युवाचार्य महाप्रज्ञजी का अन्तरंग सहयोगी बनाया था। गुरुदेव तुलसी के साथ मैं मेवाड़ में रहा, तत्पश्चात् गुरुदेव महाप्रज्ञजी के साथ उनके युवाचार्य के रूप में उदयपुर चतुर्मास और आसीन्द मर्यादा महोत्सव किया। उस यात्रा के दौरान आगामी घोषित कार्यक्रम नहीं हो सके। मेरे अन्तर्मन में मेवाड़ और मारवाड़ का ध्यान करने की भावना पहले से थी। गुरुदेव महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण के बाद मैंने उनकी अवशिष्ट यात्रा को पूरा करने की घोषणा कर दी। गुरुदेव के समय केलवा में चतुर्मास, आमेट में मर्यादा महोत्सव, रींछेड़ में अक्षय तृतीया और सिसोदा में महावीर जयंती––ये चार प्रमुख कार्यक्रम निर्धारित थे। मैं स्वयं को हल्का महसूस करता हूं कि गुरुदेव के वचनों को अक्षरशः पूरा कर दिया।

मेवाड़ में जगह–जगह जाना हुआ और मुझे इस बात का काफी संतोष है कि मैं अपने श्रावकों से गांव–गांव, घर–घर जाकर मिल सका। श्रावक तो हमारे पास आते ही हैं, यात्रा में मुझे उनके पास जाने का मौका मिला, मुझे इस बात का सात्विक संतोष है। हमारे एक दिन के प्रवास के लिए भी कहां–कहां से लोग आए। जहां तक मेरा खयाल है तेरापंथी ही नहीं, अन्य जैन भी आ गए और कहीं–कहीं जैनेतर समाज के लोग भी पहुंच गए। इसे मैं मेवाड़ के लोगों का स्नेह, सद्‌भाव, श्रद्धा और सम्मान का भाव मानता हूं। विभिन्न धर्मों और जातियों के लोग मेरे पास प्रेम, सद्‌भाव से आए। चूंकि आचार्य महाप्रज्ञजी की मेवाड़ में अहिंसा यात्रा होनी थी, इसलिए मैंने भी वही नाम स्वीकार किया और उसी रूप में यात्रा की।

मेवाड़ के अनेक श्रावकों को मैंने देखा। कुछ प्रौढ़ श्रावकों और कार्यकर्ताओं को देखा, जो चिंतनशील हैं। जिन्हें मैं पहले से जानता था, उन्हें कुछ और जानने का मौका मिला। बसंतीलालजी बाबेल मेवाड़ तेरापंथ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष हैं। मैंने देखा वे चिंतनशील और भावना–भक्ति वाले व्यक्ति हैं। न्याय के क्षेत्र में इनकी प्रगति है और वे

विवादों को भी सुलझाते हैं। इस प्रकार मुझे मेवाड़स्तरीय एक अच्छे श्रावक बसंतीलालजी बाबेल के रूप में मिले। मैंने डा. महेन्द्रजी कर्णावट को देखा। यात्रा में वे कितनी ही बार गांवों में आते रहे हैं। डॉक्टर तो हैं ही, साथ में मेवाड़ समाज के अच्छे कार्यकर्ता भी हैं। चिंतनशील व्यक्ति हैं और सुन्दर वक्तव्य देते हैं। इनके रूप में भी मुझे मेवाड़ में अच्छा कार्यकर्ता देखने को मिला। लक्ष्मणजी कर्णावट को मैंने देखा। वे भी अच्छे चिंतनशील भक्तिमान श्रावक हैं। हमारी मेवाड़ की पदयात्रा की रूपरेखा में इनका अच्छा परामर्श मिला। सुन्दर योजना के साथ इन्होंने हमें सुझाव दिए। जहां तक मेरा खयाल है, उन्होंने पथ का जो परामर्श दिया, हमने लगभग उसी रूप में उसे स्वीकार किया। लक्ष्मणजी कर्णावट मुझे श्रावक कार्यकर्ता के रूप में मिले। सवाईलालजी पोखरना कितनी–कितनी बार आते रहे हैं। मेवाड़ के एक अच्छे चिंतनशील, अच्छे काम करने वाले, मिलनसार कार्यकर्ता मुझे लगे। आमेट में मैंने कन्हैयालालजी कच्छारा को देखा, जो चिंतनशील हैं। अब वृद्धावस्था में हैं। मेवाड़स्तरीय अच्छे श्रावक कार्यकर्ता हैं। मैंने पुखराजजी दक को देखा। गुरुदेव महाप्रज्ञजी जब आसीन्द पधारे थे, संभवतः उस समय ये संपर्क में आए थे। इस बार ये हमारे बहुत पास रहे, मार्ग सर्वेक्षण में इन्होंने बहुत समय और श्रम लगाया है। इतना समय लगाना बहुत बड़ी बात है। बीच में इनके स्वास्थ्य में दिक्कत आ गई। इसके बावजूद भी ये प्रायः हमारे साथ रहे हैं। उत्तमजी सुकलेचा भी यदा–कदा रास्ते को देखने में साथ रहे। बाबूलालजी कच्छारा ने भी रास्ता आदि देखने में बड़ा श्रम किया है। यह तो मैंने कुछ नाम ले लिए, इस तरह और भी अनेक प्रौढ़ कार्यकर्ता यहां हो सकते हैं, और भी अनेक युवा कार्यकर्ता मेवाड़ में हैं, जिनमें चिंतन है, श्रद्धा–भक्ति है। हम केलवा में थे तो वहां महेन्द्रजी कोठारी थे। चतुर्मास में पूरी तरह समर्पित हो गए। मुझे नहीं पता कि इनका व्यापार किस तरह चला, पर चतुर्मास का काम सामने था तो वे किस तरह कार्य में लग गए। वे भी कितनी–कितनी संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। मेवाड़ का इतना बड़ा तेरापंथ समाज है, जिसने बहुत समय लगाया है। किस प्रकार रास्ते की सेवा की है। आमेट, भीलवाड़ा, उदयपुर, आसीन्द, देवगढ़ आदि युवक परिषदों के कार्यकर्ता सुबह–सुबह आ जाते और मार्ग सेवा करते। एक अच्छा माहौल इस यात्रा में देखने को मिला।

शासनस्तंभ मुनि घासीरामजी स्वामी जैसे महान संत की भूमि दिवेर से अब हम मेवाड़स्तरीय मंगलभावना और विदाई ले रहे हैं। हम आगे भी आत्मोद्धार की साधना करते हुए जनोद्धार का कार्य करते रहें।

आचार्य भिक्षु ने जिस भूमि पर विचरण किया था और जो तेरापंथ की जन्मस्थली है, उस भूमि पर आने का, रहने का और विहार करने का मौका मिला। अब उस जन्मभूमि से विदा लेकर हमें आगे बढ़ना है। आप लोगों ने जो मंगलभावनाएं व्यक्त की हैं, उन्हें मैं स्वीकार करता हूं। पूछा गया कि पुनः कब आएंगे? तो जब द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आदि की अनुकूलता होगी, वापस आने का मेरा मानस है। जब कभी मौका मिलेगा, मेवाड़ आने का मेरा मन हो रहा है।' कार्यक्रम का संचालन डा.महेन्द्र कर्णावट ने किया।

सायंकालीन आहार के पश्चात पूज्यप्रवर ने दिवेर तेरापंथ समाज के पचास से अधिक घरों को अपने चरणस्पर्श से पावन किया। रात्रि में श्रद्धालुओं को पूज्यप्रवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

सद्विचार बनें सत्संस्कार

11 फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः दिवेर से प्रस्थान से पूर्व अवशिष्ट घरों का स्पर्श किया। पूज्यप्रवर स्थानीय तेरापंथ भवन में भी कुछ क्षण विराजे। विहार के दौरान मार्गवर्ती बस्सी गांव में भी आचार्यवर का पदार्पण हुआ। यहां तेरापंथ के दस परिवार हैं। पूज्यप्रवर सभी श्रद्धालुओं के घरों में पधारे। संक्षिप्त कार्यक्रम में श्री ज्ञानेश्वर मेहता, प्राचार्य श्री नाहरसिंहजी, श्री हेमन्त मेहता, श्री नेमीचन्द मेहता, बालक अभिषेक मेहता, सुश्री प्रज्ञा मेहता आदि ने पूज्यवर के स्वागत में अपने भाव सुमन अर्पित किए। पूज्यवर ने ग्रामीणों को पावन संबोध प्रदान किया। मध्यवर्ती कितेला गांव में भी पूज्यवर का पदार्पण हुआ। साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों का प्रवास इसी गांव में हुआ।

आचार्यवर आज कुल 13.04 किमी. का विहार कर टाडावाड़ा में पधारे। आज का प्रवास ठाकुर महेशप्रतापसिंह सोलंकी परिवार के आवास पर हुआ। पूज्यवर का प्रवास प्राप्त कर सोलंकी परिवार अत्यन्त उल्लसित था। अपराह्न में संपूर्ण परिवार ने पूज्यवर की उपासना का लाभ लिया। टाडावाड़ा से लाम्बोड़ी मात्र दो किमी. की दूरी पर स्थित है। आचार्यवर के इस प्रवास में लाम्बोड़ीवासियों ने बड़ी संख्या में पहुंच कर उपासना का लाभ प्राप्त किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में लाम्बोड़ी तेरापंथ कन्यामंडल और दिवेर निवासी मुम्बई प्रवासी महिलाओं ने गीत के माध्यम से भावाभिव्यक्ति की। ठाकुर महेशसिंहजी ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। बालिका माही समदरिया ने अपने बालसुलभ भावों को अभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा—'हमारे जीवन में विचार का बड़ा महत्त्व है। वे विचार उच्च होते हैं, जो समीचीन और यथार्थ होते हैं। दूसरी ओर अहिंसा, सत्य आदि से ओतप्रोत आचार भी महत्त्वपूर्ण होता है। यदि विचार अच्छे होते हैं तो आचार भी अच्छा बन सकता है। किन्तु उसके लिए सद्विचार को सत्संस्कारों में परिवर्तित करना होगा। इसमें अनुप्रेक्षा का प्रयोग सहायक बन सकता है।'

चारभुजा में पुनरागमन

12 फरवरी। परमपूज्य आचार्यवर आज प्रातः चारभुजा की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती ढिलेड़िया और धनायका के ग्रामीणों को पूज्यवर का मंगल पाथेय संप्राप्त हुआ। आचार्यवर 14 किमी. का विहार कर चारभुजा के पुजारी गेस्टहाउस में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। मेवाड़ की इस यात्रा में दूसरी बार पूज्यवर के प्रवास का सौभाग्य प्राप्त कर चारभुजावासी प्रसन्नता से सराबोर थे।

प्रातःकालीन कार्यक्रम महाश्रमण विहार नामक निर्मीयमाण भवन में समायोजित हुआ। कार्यक्रम में स्थानीय सभाध्यक्ष श्री ललित चोरड़िया, श्री पारसमल पटवारी, श्री पारसमल सिंघवी, श्री नरेन्द्र पटवारी एवं कुंभलगढ़ के विधायक श्री गणेश परमार ने अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरक संभाषण हुआ।

परमपूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा—'व्यक्ति नौका से भी यात्रा करता है। यह यात्रा तो प्राचीनकाल से साधु के लिए भी सम्मत मानी गई है। नौका दो प्रकार की होती है—सच्छिद्र और निश्छिद्र। सच्छिद्र नौका यात्री को पार नहीं पहुंचा सकती। वह तो डुबोने वाली होती है। निश्छिद्र नौका से पार पहुंचा जा सकता है। हमारा शरीर भी एक प्रकार की नौका है। इसके द्वारा संसार–समुद्र से पार पहुंचा जा सकता है। यदि जीवनशैली असंयम और कषायप्रधान है तो भवजल से पार पहुंचना बहुत कठिन होता है। अध्यात्म साधना के द्वारा असंयम और कषायरूपी छिद्रों को बन्द किया जा सकता है।

आचार्यवर ने आगे कहा—'साधु के लिए पूर्ण संयम पालनीय होता है। गृहस्थ के लिए पूर्ण संयम की अनुपालना कठिन होती है। अतः उसके लिए बारहव्रतों की साधना का विधान है। गृहस्थ को उनकी साधना का अभ्यास करना चाहिए। श्रावक केवल अनुयायी ही बनकर न रहें, कुछ साधना का भी विकास करें। यह शरीर धर्म और पाप दोनों का साधन बन सकता है। इसे धर्म का साधन बनाएं तो संसार–समुद्र का पार पाना सुगम हो सकता है। कोई देखे अथवा न देखे, स्वयं को चिंतन करना चाहिए कि मेरी आत्मा की क्या स्थिति है। बड़ा पद, धन आदि मिलना कोई विशेष बात नहीं होती। जीवन में सचाई और ईमानदारी का होना विशेष बात होती है। पैसा और पद इस जन्म तक ही सीमित रहते हैं। किन्तु धर्म स्थायी रह सकता है। वह निश्चित रूप से कल्याण करनेवाला होता है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सम्यक्त्व को परिपुष्ट बनाएं

13 फरवरी। परम पावन आचार्यवर ने प्रातः चारभुजा से रींछेड़ के लिए प्रस्थान किया। मार्गवर्ती मेवाड़िया के ग्रामीणों को परमपूज्यवर का पावन पाथेय संप्राप्त हुआ। महाप्रज्ञ एकेडेमी नामक शिक्षण संस्थान के निर्मीयमाण भवन परिसर में भी पूज्यवर का पावन पदार्पण हुआ।

आचार्यवर आज आठ किमी. का विहार कर रींछेड़ पधारे। एक वर्ष में पूज्यप्रवर के दूसरी बार पदार्पण से रींछेड़वासी खुशियों में फूले नहीं समा रहे थे। पूज्यवर का प्रवास तेरापंथ तुलसी विहार में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय महिला मंडल ने गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री सोहनलाल सिंघवी, श्रीमती प्रेमलता कच्छारा, श्री आलोक भट्टाचार्य ने हृदयोद्गार व्यक्त किए। श्री डालचन्द कोठारी आदि ने अणुव्रत की परिचयात्मक लघु पुस्तिका का मराठी अनुवाद, श्री सोहनलाल कोठारी ने विचाराभिव्यक्ति के साथ अपनी कृति 'अध्यात्म पथ'

और श्री मदन कोठारी ने नशामुक्ति के संकल्प पत्र पूज्यवर के करकमलों में उपहृत किए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का प्रेरणास्पद अभिभाषण हुआ।

परमपूज्य आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा––'जैन साधना पद्धति में सम्यक्दर्शन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यों कहा जा सकता है कि वह धर्मरूपी महल का शिलान्यास होता है। सम्यक्त्व के बिना सम्यक् चारित्र नहीं हो सकता। जैन वाङ्मय में अनेक स्थानों पर सम्यक्त्व के पांच लक्षणों को उल्लेख प्राप्त होता है। किन्तु संबोधि में उनके पौर्वापर्य का क्रम भी प्राप्त होता है। उस क्रम के अनुसार सर्वप्रथम आस्तिक्य अर्थात पुण्य–पाप, आत्मकर्म आदि में विश्वास होता है। उसके बाद शम अर्थात कषाय उपशमन का अभ्यास होता है। संवेग अर्थात् मुमुक्षाभाव तीसरे क्रम पर होता है। तदुपरान्त निर्वेद अर्थात संसार से विरक्ति का भाव होता है और अनुकंपा इस क्रम में पांचवें स्थान पर आता है। सम्यक्त्व की परिपुष्टता के लिए इन पांच लक्षणों को परिपुष्ट बनाना होगा। उत्तम बात तो यह है कि क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त हो जाए। यदि वह प्राप्त हो जाता है तो सम्यक्त्व की दृष्टि से कुछ भी प्राप्त करना अवशेष नहीं रहता। वह न मिले, तब तक क्षयोपशम सम्यक्त्व को पुष्ट से पुष्टतर बनाने का प्रयास करना चाहिए।' आचर्यवर ने अपने प्रवचन में रींछेड़ के उपासक श्री डालचन्द कोठारी और श्री सोहनलाल कोठारी का भी उल्लेख किया।

इतना-सा कष्ट और उठा लो

14 फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यवर रींछेड़ से मजेरा की ओर यात्रायित थे। लगभग दो किमी. की यात्रा के पश्चात् मांगीलाल सेवक नामक पुजारी पूज्यवर के सम्मुख उपस्थित होकर बोला––'गुरुदेव! यहां आमज माता का मन्दिर है, आप मन्दिर में पधारें। पूज्यवर ने कहा––'वह तो काफी ऊपर है। पुजारी बोला––'आप द्वार तक ही पधार जाएं।' आचार्यवर ने उसकी प्रार्थना पर मन्दिर के द्वार तक पधार कर मंगलपाठ सुनाया। पुजारी पूज्यवर के चरणों के सम्मुख बैठकर विनम्र मुद्रा में बोला––'आपने भक्तों के लिए कितने कष्ट उठाए, मेरे लिए इतना–सा कष्ट उठा लो। मेरी विनती है कि आप मन्दिर में पधार जाओ। मात्र तीन सौ अट्ठाईस सीढ़ियां ही हैं। प्रभो ! आप कृपा कर दो।'

आचार्यवर ने संतों से पूछा––'इतने श्रम की निष्पत्ति क्या होगी?'

संतों ने निवेदन किया––'इस पुजारी की भावना फल जाएगी।'

पुजारी बोला––'गुरुदेव तुलसी भी इस मन्दिर में पधारे थे। तब सीढ़ियां नहीं थी, सिर्फ कच्चा मार्ग था।' आखिर करुणानिधान आचार्यवर ने पुजारी की भावना को स्वीकार कर लिया और मन्दिर की सीढ़ियों पर पूज्यचरण गतिमान हो गए। संतों ने सहारा लेने के लिए हाथ आगे बढ़ाया, किन्तु पूज्यवर बिना सहारे ही सभी सीढ़ियां चढ़ गए।

समुद्र तल से लगभग दो हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित पहाड़ों से घिरा हुआ जंगल में स्थित यह मन्दिर परिसर, उसके पास बहता हुआ प्राकृतिक निर्झर, पक्षियों का मधुर कलरव, गहरी खाइयां और ऊपर से नयनों का विषय बनने वाला प्राकृतिक सौन्दर्य समभाव का हरण करने में सक्षम होते हुए भी आचार्यवर के सम्मुख असहाय थे। मात्र पुजारी की भावना को परिपूर्ण करने के लिए इतना कठोर परिश्रम उठाने वाले इस महापुरुष का आत्मबल देखकर हर व्यक्ति श्रद्धाभिभूत था और वह पुजारी अपनी आन्तरिक प्रसन्नता और कृतज्ञभाव को शब्दों में व्यक्त नहीं कर पा रहा था। पूज्यवर ने मुख्य मन्दिर परिसर में मंगलपाठ भी सुनाया। मन्दिर से लौटते हुए पूज्यवर एक सौ अट्ठासी सीढ़ियों के पश्चात् सीधे मार्ग से पुनः विहार पथ पर पधार गए।

भारत जैन महामंडल का शिष्टमंडल पूज्य सन्निधि में

1 फरवरी को आमेट में भारत जैन महामंडल का एक शिष्टमंडल परमपूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में समुपस्थित हुआ। प्रमुख जैनाचार्यों के दर्शन और उनसे चर्चा के उद्देश्य से यात्रायित इस शिष्टमंडल को मध्याह्न में पूज्यवर की समुपासना का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान सर्वप्रथम भारत जैन महामंडल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री शान्तिलाल कवाड़ ने भारत जैन महामंडल के अध्यक्ष और स्थानकवासी समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमतिलाल कर्णावट, महावीर इंटरनेशनल के अध्यक्ष तथा भारत जैन महामंडल के महामंत्री श्री धीरज कोठारी, दिगंबर समाज

के श्री के.सी.जैन, वैश्य महामंडल के अध्यक्ष श्री प्रकाश कानूनगो, स्थानकवासी समाज के श्री किशोर खाब्या, श्री प्रसन्न लोढ़ा, साधुमार्गीय जैन संघ के उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र दसानी आदि अन्य जैन समाज के प्रतिनिधि महानुभावों तथा शिष्टमंडल के साथ समागत तेरापंथ समाज के प्रतिनिधि व्यक्तियों का परिचय प्रस्तुत किया। परमपूज्य आचार्यवर ने महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी, मंत्री मुनिश्री आदि साधु–साध्वियों से शिष्टमंडल को परिचित करवाया। अध्यक्ष श्री सुमतिलाल कर्णावट और उपाध्यक्ष श्री शान्तिलाल कवाड़ की भावपूर्ण अभिव्यक्ति के उपरान्त भारत जैन महामंडल द्वारा प्रस्तुत जिज्ञासाओं को पूज्यवर और उनके निर्देश पर साधु–साध्वियों ने समाहित किया। जिज्ञासा–समाधान के उपरान्त परम श्रद्धेय आचार्यवर ने आगंतुक महानुभावों को मंगल पाथेय प्रदान किया।

पुरस्कार सम्मान समारोह

परमपूज्य आचार्यवर की सन्निधि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा 28 जनवरी की रात्रि में पुरस्कार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत 'श्रेष्ठ सभा' के रूप में गुवाहाटी को, विशिष्ट सभा के रूप में केसिंगा को सम्मानित किया। सभा प्रोत्साहन पुरस्कार मुम्बई, सूरत, साउथ कोलकाता, अहमदाबाद, बेंगलुरु, साउथ हवड़ा, चेन्नई और उधना––इन आठ सभाओं को प्रदान किया गया।

ज्ञानशाला पुरस्कार के अंतर्गत अहमदाबाद और चेन्नई को 'श्रेष्ठ ज्ञानशाला', दक्षिण हवड़ा एवं चेम्बूर मुम्बई को 'विशिष्ट ज्ञानशाला', तिरुकलीकुन्द्रम एवं राजनगर को 'उत्तम ज्ञानशाला' के रूप में सम्मानित किया गया। साथ ही पांच श्रेष्ठ प्रशिक्षकों, दो वरिष्ठ प्रशिक्षकों, श्रेष्ठ संचालक सभा, ज्ञानशाला सहयोगी, चार श्रेष्ठ ज्ञानार्थियों तथा विज्ञ, विशारद एवं स्नातक में प्रथम तीन स्थान प्राप्तकर्ताओं, ज्ञानाशाला, ज्ञानार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण ज्ञानार्थियों को स्मृतिचिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में महासभा के निवर्तमान अध्यक्ष श्री चैनरूप चंडालिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन श्री भंवरलाल सिंघी ने किया।

राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर

परमपूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा 11–18 मई 2012 तक बालोतरा में राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर की समायोजना की जा रही है। ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान तेरह से उन्नीस वर्ष तक के बालक–बालिकाओं के लिए समायोज्य यह शिविर बालपीढ़ी में सुस्कारों के निर्माण का महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी उपक्रम है। शिविर में संभागी बनने हेतु तथा अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नं.09845446057 से संपर्क किया जा सकता है।

अक्षयतृतीया समारोह : एक निवेदन

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा आगामी अक्षयतृतीया समारोह बालोतरा में घोषित है। आगामी 24 अप्रेल को समायोजित इस पावन अवसर पर सैकड़ों तपस्वी भाई–बहन वर्षीतप का पारणा करेंगे। इस अवसर पर बालोतरा श्रावक समाज द्वारा समागत साधर्मिकों के लिए समुचित व्यवस्था की जा रही है। व्यवस्थाओं की सुगमता के लिए बाहर से आनेवालों से निवेदन है कि वे तपस्वी का नाम (संक्षिप्त परिचय के साथ) आनेवालों की संख्या आदि की जानकारी अतिशीघ्र इस पते पर प्रेषित करें––आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, नया तेरापंथ भवन, अग्रवाल कालोनी, पो. बालोतरा–344022, जि. बाडमेर (राज.) फोन नं. (02988) 220303, मो. नं. 09312222851, 09810036828

वर्षीतप प्रारंभ एवं साधना क्रम

वर्षीतप करने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए ध्यातव्य है कि भगवान ऋषभ का दीक्षा दिवस चैत्र कृष्णा अष्टमी वर्षीतप प्रारंभ करने हेतु निर्धारित तिथि है। इस बार चैत्र कृष्णा अष्टमी तदनुसार 15 मार्च 2012 को प्रारंभ होनेवाला

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

यह वर्षीतप सन् 2013 की अक्षयतृतीया पर संपन्न होगा। वर्षीतप काल में पालनीय नियम इस प्रकार हैं—— • ऊं ऋषभाय नमः मंत्र की 11 माला • ध्यान आधा घंटा • एक घंटा मौन • ब्रह्मचर्य की साधना • एक सामायिक • सचित्त एवं जमीकन्द का त्याग • रात्रि में चौविहार • एक बार प्रतिक्रमण या उस समय स्वाध्याय या जप • क्षमा की साधना : क्रोधवश कठोर शब्दों का प्रयोग हो जाए तो पारणे के एक दिन चीनी अथवा नमक या लाल मिर्च का प्रयोग नहीं करना।

आचार्यवर द्वारा नवीन घोषित चतुर्मास

1. मुनि संजयकुमारजी	विरार	5. साध्वी फूलकुमारीजी'लाडनूं	कालू
2. मुनि प्रशान्तकुमारजी	कांकरिया–मणिनगर(अहमदाबाद)	6. साध्वी शुभवतीजी	जीन्द
3. साध्वी मोहनकुमारीजी(राजल.)	भीनासर	7. साध्वी मधुस्मिताजी	सरदारशहर
4. साध्वी जयश्रीजी	बीकानेर	8. साध्वी अर्हतप्रभाजी	पुर

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

5100/– स्व.श्रीमती गीतादेवी सिंघी (धर्मपत्नी–स्व.माणकचन्दजी सिंघी, भादरा–मुम्बई) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू पदम–संतोष, आनंद–शिप्रा, नवीन–प्रेरणा, सुपौत्र वैभव, उत्सव, नमन, हर्ष, खुश, सुपौत्री विशाखा एवं श्लोका सिंघी, मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

3100/– श्रीमती जेठीबाई सिसोदिया (धर्मपत्नी–स्व.भंवरलालजी सिसोदिया) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू गणपतलाल–रमादेवी, महेन्द्रकुमार–चांदकुमारी, कन्हैयालाल– सुशीलादेवी, सुपुत्री श्रीमती सुशीलादेवी–बाबूलाल कच्छारा, सुपौत्र व पौत्रवधू विनोद–मंजु, कैलाश–मंजु, मुकेश–सीमा सिसोदिया, रायपुर–मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

2100/– श्रीमती कलकत्तीदेवी गोलछा (धर्मपत्नी–स्व.बच्छराजजी गोलछा, बीदासर) को पूज्यवर द्वारा 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र एवं पुत्रवधू केसरीचन्द–सज्जनदेवी गोलछा, सुपौत्र लोकेश गोलछा, हुबली (कर्नाटक) द्वारा प्रदत्त।

2100/– स्व. श्री जगदीशराय जैन (नगुरा) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती केलादेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू सुरेन्द्र–सुनीता, सुपौत्र व पौत्री श्रेयांश, साक्षी जैन, श्रीगंगानगर (राजस्थान) द्वारा प्रदत्त।

2100/– स्व. श्रीमती किरणदेवी राखेचा (धर्मपत्नी–श्री झणकारमलजी राखेचा, पुत्रवधू–स्व. उदयचन्दजी राखेचा, सुपुत्री–स्व. थानमलजी बाफना) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र प्रताप, अनीश, जगत, राजू, सुपौत्र मुदित, ऋषभ, निशान्त राखेचा, कोलकाता द्वारा प्रदत्त।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का 26 फरवरी को रणकपुर, 1–2 मार्च को राणी स्टेशन, 7–8 मार्च को मगरतलाव, 14–15 मार्च को जाणुन्दा, 18 मार्च को मारवाड़जंक्शन, 23–25 मार्च को सिरियारी प्रवास संभावित है। जसोल तक का यात्रा पथ पहले ही विज्ञप्ति में प्रकाशित हो चुका है। दर्शन–उपासना हेतु आने वाले श्रद्धालु उसी के अनुसार अपना कार्यक्रम सुनिश्चित करें। पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता है——

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-भिक्षु समाधि स्थल संस्थान
पो.सिरियारी–306027, जि.पाली (राजस्थान) फोन : 09680055381, 09352404641
दिल्ली कार्यालय का फोन 011–23234641 Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

प्रकाशन दिनांक : 18–2–2012

•

आदर्श साहित्य संघ, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002 के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली–110032 से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**